आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2671 • उदयपुर, सोमवार 18 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

अमृतसर (पंजाब) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 अप्रेल 2022 को सेंट सोल्जर कॉन्वेंट स्कूल जडियाला गुरू अमृतसर, (पंजाब) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान डॉ. मंगल सिंह, श्रीमान प्रमोद जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 135, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 04 की सेवा हुई तथा 04 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री अजय जी गुप्ता (विधायक, अमृतसर), अध्यक्षता श्रीमान् प्रमोद जी भाटिया (स्पोर्ट्स क्लब चैयरमेन, अमृतसर), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मगंलसिंह जी (प्रिंसिपल, समाजसेवी), श्रीमती वीना सिंह जी (समाजसेवी) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरीश सिंह जी रावत (प्रचारक), श्री देवीलाल जी मीणा, श्री कपिल जी व्यास (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

वाराणसी (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 अप्रेल 2022 को समर्पण अशोक विहार कॉलोनी, फेज–1, पहाड़िया, वाराणसी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता भारत विकास परिषद व वरूणा सेवा संस्थान ट्रस्ट रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 105, कृत्रिम अंग वितरण 90, कैलिपर वितरण 15 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. इन्दुसिंह जी (अध्यक्ष, वरूण सेवा समिति), अध्यक्षता श्री रमेश जी लालवानी (संस्थापक चैयरमेन), विशिष्ट अतिथि श्री विवके जी सूद, श्री मनोज कुमार जी श्रीवास्तव, श्री पंकज सिंह जी, श्री सी.ए. अलोक शिवाजी (समाज सेवी) रहे।

अंजली जी (पी.एन.डो.), श्री नरेश जी वैश्णव (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीश जी हिन्डोनिया, श्री राकेश सिंह जी (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं कृत्रिम अंग (हाथ–पांव) माप शिविर

दिनांक : 18 अप्रैल, 2022

▪ टी.एम.सी. हॉल, दत्तापुर बस स्टेण्ड के पास, धामणगॉव, अमरावती, महाराष्ट्र

दिनांक : 24 अप्रैल, 2022

▪ संत बाबा वालजी आश्रम, श्री कृष्ण राधा मंदिर कोटला कला, उना, हिमाचल प्रदेश
▪ गजानन मंगल कार्यक्रम, गजानन मंदिर के पास, शंकर नगर, पुसद, महाराष्ट्र
▪ कुकटपल्ली, हैदराबाद, तेलंगाना
▪ झाँसी, उत्तरप्रदेश

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 24 अप्रैल, 2022

स्थान

आनन्द लोयंस क्लब सोसायटी बैठक मन्दिर के पास, सरदार बाग के पीछे, आनन्द, गुजरात, सायं 4.30 बजे

सनातन धर्म मंदिर, सी ब्लॉक, से. 19, नोयडा, उत्तरप्रदेश, सायं 4.00 बजे

श्री सनातन धर्मसभा, राम बाजार, सोलन, हिमाचल प्रदेश, प्रातः 11.00 बजे

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

भजन और भोजन

एक भिखारी, एक सेठ के घर के बाहर खड़ा होकर भजन गा रहा था और बदले में खाने को रोटी मांग रहा था । सेठानी काफी देर से उसको कह रही थी, आ रही हूं । रोटी हाथ में थी पर फिर भी कह रही थी कि रुको आ रही हूं । भिखारी भजन गा रहा था और रोटी मांग रहा था । सेठ ये सब देख रहा था, पर समझ नहीं पा रहा था ।

आखिर सेठानी से बोला– रोटी हाथ में लेकर खड़ी हो, वो बाहर मांग रहा हैं, उसे कह रही हो आ रही हूं । तो उसे रोटी क्यों नहीं दे रही हो...!' सेठानी बोली, हां रोटी दूंगी, पर क्या है ना कि, मुझे उसका भजन बहुत प्यारा लग रहा है। अगर उसको रोटी दूंगी तो वो आगे चला जायेगा। मुझे उसका भजन और सुनना है।

यदि प्रार्थना के बाद भी भगवान आपकी नही सुन रहा है, तो समझना कि उस सेठानी की तरह प्रभु को आपकी प्रार्थना प्यारी लग रही हैं। इसलिये इंतजार करो और प्रार्थना करते रहो। जीवन मे कैसा भी दुख और कष्ट आये, पर भक्ति मत छोड़िए। क्या कष्ट आता है, तो आप भोजन करना छोड देते हैं ? क्या बीमारी आती है, तो आप सांस लेना छोड़ देते हैं। नहीं ना ? फिर जरा सी तकलीफ आने पर आप भक्ति करना क्यों छोड़ देते हो ? कभी भी दो चीज मत छोड़िये, भजन और भोजन। भोजन छोड़ दोगे तो जिंदा नहीं रहोगे, भजन छोड़ दोगे तो कहीं के नही रहोगे। सही मायने में भजन ही भोजन है।

जिंदगी कैसे जीनी चाहिए

एक कारपेंटर था। बेहद मेहनती। तारीफें ही उसकी कमाई थी। बूढ़ा हो चला था। एक दिन विचार आया–अब यह छोड़कर परिवार के साथ आखिरी दिन बिताने चाहिए। वर्कशाप के मालिक को उसने अपना यह विचार बताया। मालिक दुःखी हुआ, उसका सबसे विश्वसनीय कर्मचारी हमेशा के लिए जा रहा था। मालिक ने कुछ सोचा, फिर कहा–तुम एक आखिरी घर और बना दो। कारपेंटर का मन नहीं था फिर भी उसने कहा–ठीक हैं, मै। अपनी जिंदगी का आखिरी लकड़ी का घर और बनाऊंगा।

चूंकि, वह मन में पहले ही रिटायर हो चुका था, इसलिए उसने बड़ी मुश्किलों से वह घर पूरा किया। लेकिन उस घर को देखकर कोई भी कह सकता था, यह किसी नौसिखिए ने बनाया है।

मालिक घर देखने आया और बोला– यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए तोहफा है अब कारपेंटर दुःखी हो गया। सोचने लगा – अगर यह घर मुझे ही मिलना था, तो मैं इसे दुनिया का सबसे शानदार घर बना सकता था।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बहनों, भाइयों और माताओं। लक्ष्मणजी ने कहा कि– मुझे तो कोई स्पदंन नहीं होता। आप कहते हो, मेरा बांया अंग फड़कता है। आशंका भाव से आतुर हृदय धड़कता है। तो लक्ष्मणजी ने कहा– नहीं माँ, भाभी विश्वास करो। ये छल है, मैं आपको छोड़ कर नहीं जा सकता। ये जगंल है, दण्डकारण्य है, ये दण्डकवन है। ये गोदावरी का किनारा है, यहाँ बहुत राक्षस रात को विचरण करते हैं, यहाँ हिंसक पशु हैं। मैं आपकी रक्षा करूंगा। यहाँ शेर–चीते भी हैं, यहाँ चमकादड़ भी हैं, यहाँ भालू भी हैं। माता, मुझे जाने को मत कहिये। पर माताजी को होनहार थी। उन्होंने कहा– तुम कैसे क्षत्रिय हो ? बनते हो निश्क्रियजन हो और तुम कहते हो भाईसाहब भाईसाहब, मेरे राम भगवान। अरे तुम्हारे राम भगवान सकंट में है, बड़े भाई सकंट में है, फिर भी रक्षा नहीं करते ? लक्ष्मण जी को लगा आज भाभीजी को क्या हो गया ?

मैं कैसा क्षत्रिय हूँ इसको,
तुम क्या समझोगी देवी।
रहा सदा ही दास तुम्हारा,
और रहूंगा पद सेवी।।
उठा पिता के भी विरूद्ध मैं,
किंतु आर्य भार्या हो तुम।।
इसिलिए क्षमा करता हूँ ,

अबला हो आर्या हो तुम।।

और लक्ष्मण जी ने एक रेखा खीच दी। एक अनु ाासन की रेखा। एक जाजम बिछा दी। इस जाजम को छोड़कर मत जाइयेगा। ये परिवार की जाजम, ये समाज की जाजम, ये मर्यादा की जाजम, ये अपनी लोकसंस्कृति की जाजम, ये अच्छी परम्पराओं की जाजम, ये सुरीतियों की जाजम।

रहना इस रेखा के भीतर,
न मालूम अब क्या होगा।।
मेरा कुछ वश नहीं कर्मफल,
कहाँ न कब किसने भोगा।।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें
कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

कर्म और भावना

गाय ने केला देखकर मुँह मोड़ लिया.. औरत ने गाय के सामने जाकर फिर उसके मुँह मे केला देना चाहा, लेकिन . .. गाय ने केला नहीं खाया, पर औरत केला खिलाने के लिये पीछे ही पड़ी थी... जब औरत नहीं मानी, तो गाय सींग मारने को हुई.. औरत डरकर बिना केला खिलाये चली गयी। औरत के जाने के बाद पास खडा साँड बोला– "वह इतने 'प्यार से' केला खिला रही थी, तूने केला भी नहीं खाया और उसे डराकर भगा भी दिया" प्यार नहीं मजबूरी... आज एकादशी है, औरत मुझे केला खिलाकर पुण्य कमाना चाहती है... वैसे यह मुझे कभी नहीं पूछती, गलती से उसके मकान के आगे चली जाती हूँ तो डंडा लेकर मारने को दौड़ती है.।

गाय बोली– प्रेम से सूखी रोटी भी मिल जाये, तो अमृत तुल्य है जो केवल अपना भला चाहता है वह दुर्योधन है जो अपनों का भला चाहता है वह युधिष्ठिर है और... जो सबका भला चाहता है वह श्रीकृष्ण है। अतः कर्म के साथ–साथ भावनाएं भी महत्व रखती हैं।

सम्पादकीय

मानव मन की संरचना ठोस भावों से न होकर द्रवित भावों से हुई है। इसलिए जिसमें दया, करुणा या सदाशयता नहीं होती उसे पत्थर दिल कहा जाता है। यह करुणा प्रतिपल प्रवाहित होती रहती है, जीव में भी और ईश्वर में भी। शायद परमात्मा की करुणा का प्रवाह इतना प्रबल होता होगा कि उसे कोई भी जरूरतमंद व्यक्ति सीधे सह न पाए। जैसे स्वर्गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए भगवान शिव का अवलम्ब लिया गया ठीक वैसे ही लगता है कि परमात्मा ने अपनी करुणा का प्रवाह प्राणिमात्र तक पहुँचाने के लिए मानव हृदय को माध्यम बनाया है। यदि हमारे हृदय से करुणा प्रवाहित होती है तो हमें तत्काल समझना चाहिये कि प्रभु ने हमें माध्यम बनाया है। ईश्वरीय कार्य में हमारा योगदान होने जा रहा है। इस पवित्र चयन के लिए हम प्रभु का आभार तो व्यक्त करें ही यह भी प्रयास करें कि उस करुणा प्रवाह की एक– एक बूंद वहाँ तक पहुँचे , जहाँ उसकी आवश्यकता है। यही भाव जीव– और शिव का संबंध प्रमाणित करता है।

कुछ काव्यमय

सेवा दीप अखण्ड हो, फैले पूर्ण उजास।
दमके सारे मानवी, कोई आम न खास।
बिना भेद सेवा सधे, ये ही सच्ची राह।
ये ही हज की पूर्णता, यही बनी उमराह।।
जो गीता ना पढ सकूं, पर सेवा हो जाय।
ये ही मेरी वन्दना, ये ही है स्वाध्याय।।
गुरुवाणी गाता रहूँ, हाथ करें नित सेव।
हर पीड़ित के रूप में, मुझको दीखें देव।।
प्रभु से ये ही प्रार्थना, सेवा हो दिन रात।
सेवा मेरी सांझ हो, सेवा हो परभात ।।

जो होगा शुभ होगा

एक राजा अपने मंत्री के साथ जंगल के शिकार के लिए निकले। जंगल में यात्रा के दौरान कंटीली झाड़ी से राजा की अंगुली कट गई और रक्त बहने लगा। यह देख मंत्री ने राजा से कहा–चिंता न करें राजन!
भगवान जो करता है, अच्छे के लिए करता है। राजा पीड़ा से व्याकुल थे, ऐसे में मंत्री का कथन सुन क्रोध से तमतमा उठे। क्रोध में आकर राजा ने मंत्री को कारावास में डाल देने की अपने सुरक्षाकर्मियों को आज्ञा दी। राजा के आदेश का पालन करते हुए सुरक्षाकर्तियों ने तुरंत ही मंत्री को पकड़कर रियासत में ले जाकर कारावास में डाल दिया। कुछ समय बीता और राजा एक दिन पुनः शिकार पर गए, कुछ दूर ही चले थे कि नरभक्षियों के एक दल ने उन्हें पकड़ लिया। उनकी बलि देने की तैयारी होने लगी। तभी उनकी कटी उंगली देख नरभक्षियों का प्रमुख आचार्य बोला– अरे! इसका तो अंग–भंग है, इसकी बलि स्वीकार नहीं की जा सकती। राजा को छोड़ दिया गया। जीवनदान मिला तो राजा को अपने प्रभुभक्त मंत्री की याद आई और अपनी गलती का बोध हुआ। वे तुरंत अपने राज्य लौटे और जिस कारागार में मंत्री को रखा था वहां जाकर मंत्री को प्रेमपूर्वक गले लगाया। सारी घटना सुनाई और पूछा कि मेरी उंगली कटी तो इससे भगवान ने मेरी जान बचाई, पर तुम्हें मैंने इतना अपमानित किया तो उसमें तुम्हारा क्या भला हुआ? मंत्री मुस्कराकर बोले– राजन! यदि मैं आपके साथ होता तो आपके स्थान पर मेरी बलि चढ़ना सुनिश्चित था, इसलिए भगवान जो भी करते हैं, मनुष्य के भले के लिए ही करते हैं। बन्धुओ ! कई बार हमारे जीवन में ऐसी घटनाएं है, जो हमें उस वक्त अच्छी नहीं लगती, लेकिन वह आगे जाकर हमारे लिए शुभ साबित होती है। इसलिए मित्रों! आपके जीवन में भी कुछ ऐसा घटे तो चिंता मत करिए, नकारात्मक सोच को उखाड़ फेंकिए और इस घटना के पीछे सकारात्मक पहलुओं को देखिए। फिर आप भी मानने लगेंगे कि जो होता है, वह अच्छे के लिए ही होता है।

– कैलाश 'मानव'

पत्थर या चट्टान

एक किसान के खेत में एक पत्थर था। उसे लगता था मानो वह कोई बहुत बड़ी चट्टान है, जो अंदर फँसी हुई है। वह उससे अक्सर ठोकर खाकर गिर जाता था। कभी–कभी उसके खेती के औजार टूट जाते। लेकिन वह बार–बार यह सोचकर टाल देता था कि इतनी बड़ी चट्टान को मैं अकेले कैसे निकालूँ?

परंतु एक दन उसका हल टूट गया, तब उसने निश्चय किया कि अब तो इस चट्टान को हटाकर ही दम लूँगा। वह चार–पाँच आदमियों को बुलाकर लाया तथा अन्य बड़े–बड़े उपकरण भी लेकर आया। उसने अपने फावड़े से उस चट्टान पर दो–चार प्रहार किए ही थे कि वह बाहर आ गई। परन्तु

यह कोई चट्टान नहीं थी, यह तो पत्थर का एक टुकड़ा मात्र ही था। लोगों ने उससे कहा–तुम तो किसी बड़ी–सी चट्टान को निकालने की बात कह रहे थे। यह तो पत्थर का एक छोटा–सा टुकड़ा ही है।

किसान आश्चर्यचकित भाव से बोला– मुझे स्वयं को पता नहीं था कि यह कोई पत्थर का टुकड़ा है, मैं तो स्वयं इसे बड़ी चट्टान मानता था।

इसी तरह जीवन में भी कई बार हम छोटी–छोटी समस्याओं को बहुत बड़ी मान लेते हैं तथा उनको दूर करने का प्रयास नहीं करते।

हम यह सोचने लग जाते हैं कि हम इन्हें दूर नहीं कर सकते हैं। तब वे समस्याएँ हमें तकलीफ देती चली जाती हैं, लेकिन जब हम किसी भी समस्या का मुकाबला करते हैं, तब हमें मालूम चलता है कि अरे! यह तो छोटी–सी समस्या है। इसे तो हम काफी पहले ही हल कर लेते तो अच्छा होता। इसीलिए समस्या के पैदा होते ही उसका जड़ से निराकरण कर देना चाहिए, नहीं तो वह हमें बार–बार परेशान करती रहेगी।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

परीक्षा देकर वह वापस सरदारशहर लौट आया। तार प्रशिक्षण व उसकी परीक्षा भी हो चुकी थी, जे.ए.ओ. जूनियर एकाउन्ट्स ऑफिसर की परीक्षा भी दे दी। पुनः वह अपने दैनन्दिन कार्यों में संलिप्त हो गया। इन्सपेक्शन के लिये आये दिन इधर उधर जाना ही पड़ता था, अब उसने जहां भी जाता वहां घंटे भर का सत्संग करना शुरू कर दिया। पोस्ट ओफिसों में सदवाक्यों की तख्तियां लगाने का काम भी वापस शुरू कर दिया। अब कहीं कोई इस तरह के सदवाक्यों की तख्ती लगी देखता तो कैलाश को जानने वालों को पता चल जाता कि यहां जरूर कैलाश आकर गया है। कई लोग कैलाश के इन प्रयासों का उपहास भी करते तो कई प्रशंसा भी। कैलाश पर इन चीजों का असर नहीं पड़ता, वह अपनी धुन में जो अच्छा लगता, करता जाता।

जीवन इसी गति से आगे बढ़ता रहा, अचानक एक दिन इसमें व्यवधान उत्पन्न हो गया। जयपुर से राधाकृष्ण सोनी का फोन आया, वह कैलाश को बधाई दे रहा था। कैलाश को समझ में नहीं आया किस बात की बधाई दे रहा है तो उसने पूछ लिया। सोनी ने बताया कि जे.ओ.ए. की परीक्षा में कैलाश पास हो गया है। उसे यकीन ही नहीं हुआ, उसने तो सातवां पेपर जानबूझकर पूरा नहीं दिया था फिर वो कैसे पास हो गया। सोनी के पास भी इसका कोई जवाब नहीं था, परीक्षक ने शायद 30 अंकों के उत्तरों से ही प्रभावित होकर उसे पास कर दिया हो। सोनी से उसके परिणाम के बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह एक पेपर के कारण अनुत्तीर्ण हो गया है। कैलाश ने दुःख प्रकट किया और शीघ्र ही जयपुर में मिलने का कह फोन रख दिया।

अंश - 068

व्यक्तिगत व राष्ट्रगत

सम्राट सिकंदर का सेनापति सेल्यूकस मगध के महामंत्री चाणक्य से मिलने की इच्छा लेकर मगध की राजधानी के राजमार्ग से निकला। धनिकों की बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं बाजार की चकाचौंध और ऐश्वर्य देखकर वह आश्चर्य में डूब गया। सोचा, इन्हीं में से कहीं महामंत्री चाणक्य का भी महल होगा।
जब सामान्य जनों का इतना ऐश्वर्य तो महामंत्री का ऐश्वर्य कैसा होगा! इन्हीं विचारों में डूबा सेनापति एकाएक चौंका। अरे, नगर तो पीछे छूट गया। कहां ले जा रहे हो ? उसने राजसैनिक से प्रश्न किया। महामंत्री का निवास निकट ही है। एक झोंपड़ी की ओर इंगित करके सैनिक ने उत्तर दिया। पर्ण कुटी में दुनिया के सबसे शक्तिशाली सम्राट के महामंत्री का आवास ? सेनापति को विश्वास ना हुआ। सेनापति ने झोंपड़ी में प्रवेश किया और दंग रह गया। देखा कि एक व्यक्ति छोटी सी धोती और एक साफा धारण किए एक कंबल बिछाए दीपक के प्रकाश में कुछ लिख रहा है। सेनापति ने उन्हें अभिवादन करते हुए कहा– मैं आपसे कुछ व्यक्तिगत बातें करना चाहता हूं।
महामंत्री बोले अवश्य उन्होंने अपने सेवक को आवाज दी, यह दीपक ले जाओ, दूसरा दीपक ले आओ। सेवक आशय समझ गया। पहला दीपक बुझा कर दूसरा दीपक जला दिया गया। वार्तालाप प्रारंभ हो गया, पर सेनापति के मन में बड़ा कौतूहल था था। एक दीपक बुझा कर उसी प्रकार का दूसरा दीपक क्यों जलाया गया।
रहस्य क्या है ? आखिर उससे न रहा गया। चलते चलते उसने महामंत्री से प्रश्न किया, महामंत्री धृष्टता के लिए क्षमा करें तो एक प्रश्न पूछूं?
सेनापति ने पूछा मेरे आगमन पर आपने एक दीपक बुझाया, और दूसरा दीपक जलाया । पर दीपको में तो कोई अंतर नहीं दिखता। रहस्य क्या है? महामंत्री हंसे और बोले, भाई रहस्य कुछ नहीं । जब आप आए तो मैं राज्य का कार्य कर रहा था। उस समय मैंने उस दीपक से कार्य किया जिसमें राज्य के धन का तेल जलता था। परंतु आपसे व्यक्तिगत बात करनी थी, अतः मैंने उस दीपक को बुझा दिया, और दूसरा दीपक जलवाया, जिसमें मेरे निजी धन का तेल जलता है।
सेनापति अपने मन में सोचने लगा, जब इस देश में चाणक्य जैसे महामंत्री रहेंगे यह देश कभी भी पराजित ना होगा।

चिकित्सा के बाद दिव्यांग कन्याओं का पूजन

नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा हॉस्पीटल परिसर में शुक्रवार को 101 दिव्यांग कन्याओं का माता स्वरूप पूजन किया गया। देश के विभिन्न राज्यों से आई इन कन्याओं के नवरात्रि सप्ताह के दौरान दिव्यांगता में सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन किए गए थे। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि उपहार, प्रसाधन सामग्री व नैवैद्य के साथ जरूरतमंद कन्याओं को व्हील चेयर, कैलीपर प्रदान कर महाआरती की गई। संस्थापक कैलाश जी 'मानव' ने संदेश में कहा कि जो परिवार व समाज बेटियों के प्रति पूर्ण संवेदनशील होकर उनका पथ प्रशस्त करता है। वह राष्ट्र के विकास में बड़ा योगदान करता है। निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने संचालन करते हुए कहा कि महिलाओं ने पृथ्वी से आकाश तक अपनी उपलब्धियों से यह साबित कर दिया है कि वे वस्तुतः शक्तिस्वरूपा हैं और उनके सम्मान से मंगल ही होता है। महिम जी जैन, राकेश जी शर्मा, दिलीप जी चौहान, प्रवीण कुमार जी, शीतल जी अग्रवाल व मोहित जी मेनारिया ने भी पूजा–अर्चना में सहयोग किया।

तरबूज ही नहीं, इसके छिलके भी गुणकारी

इसके छिलके में पाया जाने वाला साइट्रलाइन ऊर्जा का अच्छा स्रोत है। साइट्रलाइन रक्त वाहिकाओं के फैलाव को बढ़ावा देता है। एक अध्ययन के अनुसार साइट्रलाइन की खुराक मांसपेशियों में ऑक्सीजन की पूर्ति को बढ़ा देती है, जिससे आलस दूर होता है। इसके छिलके में फाइबर भी अधिक होता है। यह बीपी के रोगियों के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। इसका पेठा, सलाद या फिर जूस भी बनाकर उपयोग में ले सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

बनें सहारा
बेसहारों के लिए,
बने किनारा भ्रमित
नावों के लिए।
जो जिये अपने लिए
तो क्या जीये,
जी सकें तो जिये
हजारों के लिए।।

बेसहारों के लिए भगवान है। भगवान ने ही जीवन दिया है। कैलाश कई बेसहारों का सहारा बना है। थने खुद ही भगवान बणा दी दो, पिताजी मदनलाल जी अग्रवाल, माता जी सोहनी देवी, मामा जी डॉक्टर रामू जी धानुका जी, उनके पुत्र पवन जी धानुका, नाना जी श्रीमान रघुनाथ जी धानुका, दादा जी किशन लाल जी कुचामणियां, कैलाश तेरे को तो बहुत सारा मिल गया। जन्मा जब से एक छत मिल गई, भले ही कच्ची थी।

परमपूज्यनीया माता जी सोहनी देवी की कृपा से 05 साल की उम्र में गीता जी का ज्ञान माता जी ने करवा दिया, अर्जुन क्या तुझे बोधि की प्राप्ति हुई ? क्या तेरा अज्ञान मिटा ? क्या तूं कर्त्तव्य निभाने के लिए तैयार है ? हाँ, प्रभु मेरा अज्ञान मिटा है। मैं तैयार हूँ। कर्त्तव्य कर्म के लिए, अनित्य, समता भाव की पुष्टि।

अद्वेष्टा सर्वभूतानां
मैत्री करूणा एव च।
निर्ममो निरहंकारः
समदुःखसुखः क्षमी।।

यह सब भगवान की वाणी है। माता जी की कृपा से 05 साल की उम्र में गीता जी की पिताजी की कृपा से रामचरितमानस का ज्ञान। ये अवचेतन मन और चेतन मन के बीच की दीवार मिट गई। चेतन मन तो बहुत सोचता है, ये संसार ये जीवन अनित्य है। मुझे समता भाव में रहना है। मुझे राग–द्वेष से मुक्ति पाना है, अवचेतन मन अन्दर का मन, चौबीसों घंटे प्रतिक्रिया करना, पुरानी प्रतिक्रिया जो जमी हुई है, उसको निकाल देना। अवचेतन मन चौबीसों घंटे काम करता है, लेकिन अन्धा है। रात को सोये होंगे, दस बार मच्छरों ने काटा होगा, अवचेतन मन ने हाथ को सन्देश दिया, और हाथ माथे पर गया, सुबह चेतनमन को मालूम ही नहीं, अवचेतन मन सोता नहीं है। अवचेतन मन चौबीसों घंटे काम करता है। प्रतिक्रिया क्या करेगा ? जो भी जमें हुए संस्कार हैं। विज्ञान तो ठीक है, विज्ञान ने कहा कुछ आहट हुई। कुछ शब्द है, रस है, रूप है, गंध है, त्वचा का स्पर्श है। संज्ञा उसका मूल्यांकन करती है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 420 (कैलाश 'मानव')

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023